अध्ययन सामग्री ! -

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातकोत्तर

सेमेस्टर - IV

प्रपत्र - आठ

सुमनकुमारी

सहायक प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

'लोटी' भाग - I

प्लेटो → काल → (४२७ - ३४७ ई०पू०)

प्लेटो का चिन्तन संवादों में मुखरित हुआ है यह विश्वास किया जाता है कि अकादमी की स्थापना के पूर्व वे अनेक संवादों क( Dialogues) की रचना कर चुके थे। अकादमी की स्थापना के २० वर्ष तक उन्होंने कोई संवाद नहीं लिखा, लेकिन अंतिम वर्षों में फिर से संवादों की ओर प्रवृत्ति हुए। उनका अंतिम संवाद 'लाज' नाम से प्रसिद्ध है। प्लेटो के कुछ संवाद 'पोलिटेईया', 'रिपब्लिक' तथा 'इयान' में संकलित है कुल मिलाकर विद्वान प्लेटो की ३८ रचनाओं को प्रामाणिक कृतित्व के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसमें २७ संवाद और ११ पत्रों का एक संग्रह शामिल है। यह बात भूलने की नहीं है कि प्लेटो ने काव्य एवं कला के सम्बन्ध में किसी स्वतंत्र ग्रंथ की रचना नहीं की है संवादों में प्रसंगवश काव्य या कला की चर्चा आती रहती है। ऐसे संवादों में 'इयान', 'फैड्रस', 'सिम्पोसियम' आदि का नाम लिया जा सकता है। प्लेटो की संवादों की प्रमुख विशेषता है- द्वन्द्वात्मक पद्धति। इस द्वन्द्वात्मक पद्धति की अपनी विशेषताएं हैं जिसके प्रति विद्वानों का अपना आकर्षण रहा है। काव्य या कला के विषय में प्लेटो की बुनियादी चिन्तन है- रिपब्लिक या आदर्श गणराज्य में उसकी उपयोगिता। इस उपयोगिता का निर्णय

करने के लिए ही प्लेटो ने काव्य की प्रेरणा, काव्य का स्वरूप, काव्य के विषय, काव्य के रूप, काव्य एवं सत्य का संबंध, काव्य एवं सौन्दर्य, काव्य एवं लोकमंगल, कला की परिभाषा, कलाओं में काव्य का स्थान, जीवन और कविता आदि अनेक विषयों पर चर्चा की है। प्लेटो की इन विचारों की व्यापकता को देखते हुए इनमें एक व्यापक व्यवस्थित काव्य सिद्धान्त के पुर्ननिर्माण की संपन्न संभावनाओं का संकेत मिलता है। भले ही प्लेटो की संवादों में निश्चितक्रम का निर्वाह न किया गया हो।

) **काव्य प्रेरणा और काव्य सत्य :→** प्लेटो ने काव्य और कला को दैवी प्रेरणा का का प्रमाण माना है। उन्होंने अपने संवादों में अनेक स्थानों पर कवि के दिव्यपागलपन (Divine Insanity) की चर्चा की है। उनका यह भी विश्वास है कि सृजन के क्षणों में परमात्मा कवियों से उनका मस्तिष्क छीन लेता है। विद्या की देवी सरस्वती (Muse) कवि के भीतर एक ऐसी कल्पना शक्ति जाग्रत करती है कि वे भावावेग के प्रेरणा के बिना नहीं रह सकता। प्लेटो ने प्रसिद्ध प्राचीन ग्रीक कवि होमर की कृतियों – 'इलियड' और 'ओडिसी' पर विचार करते हुए यह भी मत व्यक्त किया है कि उनकी कविताओं और चरित्रों में भावावेग और कल्पनातिरेक है। उन्होंने यहाँ तक कहा कि

जनता भर के लोगों को होमर ने झूठ बोलना ही सिखाया है।

प्लेटो द्वारा कविता की दिव्य प्रेरणा की चर्चा एक प्रकार से काव्य सृजन की प्रक्रिया के संबंध में प्लेटो के विचार है जो 'इयान' नामक संवाद में मिलते हैं। काव्य सृजन प्रक्रिया के संबंध में प्लेटो की यह मान्यता है कि सभी समर्थ कवि अपनी रचना किसी सचेष्ट कलात्मक प्रेरणा द्वारा नहीं बल्कि दैवी शक्तियों से प्रेरित एवं अभिभूत होकर करते हैं। अर्थात कवि कर्म किसी वैज्ञानिक तर्क व तर्क पद्धति पर आधारित नहीं है कवि में सृजन की क्षमता का उदय दैवी शक्ति की प्रेरणा के रूप में होता है। निष्कर्ष यह कि काव्य सृजन ऐसी मनःस्थिति में होता है जब कवि अपनी सहज विवेक व्यस्कता को खोकर किन्हीं दैवी शक्तियों के अधीन हो जाता है। प्लेटो का विचार है कि — "इस अवस्था में केवल एक यंत्र माध्यम मात्र रह जाता है इस मनःस्थिति उच्चरित अमूल्य वाणी का कर्ता स्वयं कवि नहीं होता वह दैवी शक्तियों का माध्यम मात्र होता है। समस्त सुन्दरतम् आविष्कार मूलतः काव्य देवियों द्वारा होता है, अलौकिक सत्य द्वारा अधिकृत कवि श्रेष्ठ नहीं, उनका प्रवक्ता मात्र होता है। सृजन को प्लेटो सचेष्ट प्रयत्न न मानकर अनायास घटित घटना मानते हैं। उनके मतानुसार

दैवी अनुकम्पा के बिना कोई कवि कवि नहीं हो सकता, काव्य सृजन को प्लेटो ने एक सुनिश्चित कलात्मक प्रयास नहीं माना।" इस प्रकार प्लेटो ने कवि को कविता का निमित्त कारण मानकर उसे सभी दायित्वों से मुक्त कर दिया। कवि कविता के प्रति इस हद तक समर्पित हो जाता है कि कवि कविता की रचना नहीं करता, वह स्वयं रच जाती है उसका रचनाकार तो ईश्वर ही है।